शीतला चालीसा

॥ दोहा॥

जय जय माता शीतला,

तुमहिं धेरै जो ध्यान।

होय विमल शीतल हृदय,

विकसै बुद्धि बलज्ञान॥

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

घट घट वासी शीतला,

शीतल प्रभा तुम्हार।

शीतल छइयां में झुलई,

मइया पलना डार ।॥

॥ चौपाई॥

जय जय जय शीतला भवानी,

जय जग जननि सकल गुणखानी।

गृह - गृह शक्ति तुम्हारी राजित,

पूरण शरदचंद्र समसाजित।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

विस्फोटक से जलत शरीरा,
शीतल करत हरत सब पीरा।

मातु शीतला तव शुभनामा,
सबके गाढ़े आवहिं कामा।

शोकहरी शंकरी भवानी,
बाल-प्राणरक्षी सुख दानी।

शुचि मार्जनी कलश कर राजै,
मस्तक तेज सूर्य समराजै।

चौसठ योगिन संग में गावैं,
वीणा ताल मृदंग बजावैं।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

नृत्य नाथ भैरो दिखाएं,
सहज शेष शिव पार न पावै।

धन्य-धन्य धात्री महारानी,
सुरनर मुनि तब सुयश बखानी।

ज्वाला रूप महा बलकारी,
दैत्य एक विस्फोटक भारी।

घर-घर प्रविशत कोई न रक्षत,
रोग रूप धरि बालक भक्षत।

हाहाकार मच्यो जगभारी,
सक्यो न जब संकट टारी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

तब मैया धरि अद्भुत रूपा,
करमें लिये मार्जनी सूपा।

विस्फोटकहिं पकड़ि कर लीन्ह्यो,
मुसल प्रहार बहुविधि कीन्ह्यो।

बहुत प्रकार वह विनती कीन्हा,
मैया नहीं भल मैं कछु चीन्हा।

अबनहिं मातु, काहुगृह जइहौं,
जहाँ अपवित्र सकल दुःख हरिहैं।

भभकत तन, शीतल हैवै जइहैं,
विस्फोटक भयघोर नसइहैं।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

श्री शीतलहिं भजे कल्याना,
वचन सत्य भाषे भगवाना।

विस्फोटक भय जिहि गृह भाई,
भजै देवि कहँ यही उपाई।

कलश शीतला का सजवावै,
द्विज से विधिवत पाठ करावै।

तुम्हीं शीतला, जग की माता,
तुम्हीं पिता जग की सुखदाता।

तुम्हीं जगद्धात्री सुखसेवी,
नमो नमामि शीतले देवी।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

नमो सुक्खकरणी दुःखहरणी,
नमो-नमो जगतारणि तरणी।

नमो नमो त्रलोक्य वन्दिनी,
दुखदारिद्रादिक निकन्दनी।

श्री शीतला, शेढ़ला, महला,
रुणलीहयुणनी मातु मंदला।

हो तुम दिगम्बर तनुधारी,
शोभित पंचनाम असवारी।

रासभ, खर बैशाख सुनन्दन,
गर्दभ दुर्वाकंद निकन्दन।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

सुमिरत संग शीतला माई,
जाहि सकल दुख दूर पराई।

गलका, गलगन्डादि जुहोई
ताकर मंत्र न औषधि कोई।

एक मातु जी का आराधन,
और नहिं कोई है साधन।

निश्चय मातु शरण जो आवै,
निर्भय मन इच्छित फल पावै।

कोढ़ी, निर्मल काया धारै,
अन्धा, दृग-निज दृष्टि निहारै।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

वन्ध्या नारि पुत्र को पावै,
जन्म दरिद्र धनी होई जावै।

मातु शीतला के गुण गावत,
लखा मूक को छन्द बनावत।

यामे कोई करै जनि शंका,
जग में मैया का ही डंका।

भनत रामसुन्दर प्रभुदासा
तट प्रयाग से पूरब पासा।

पुरी तिवारी मोर मोर निवासा,
ककरा गंगा तट दुर्वासा।

हिंदीपथ.कॉम – HindiPath.com

अब विलम्ब मैं तोहि पुकारत,
मातु कृपा कौ बाट निहारत।

पड़ा क्षर तव आस लगाई,
रक्षा करहु शीतला माई।

हिन्दीपथ.कॉम

अन्य चालीसा पढ़े

- हनुमान चालीसा
- शिव चालीसा
- दुर्गा चालीसा
- शनि चालीसा
- गणेश चालीसा
- लक्ष्मी चालीसा
- राम चालीसा
- विष्णु चालीसा
- गायत्री चालीसा
- काली चालीसा
- भैरव चालीसा
- सरस्वती चालीसा
- कृष्ण चालीसा
- सूर्य चालीसा
- महावीर चालीसा
- साईं चालीसा
- महाकाली चालीसा
- तुलसी चालीसा
- बगलामुखी चालीसा
- गोरख चालीसा
- गोपाल चालीसा
- नवग्रह चालीसा
- रविदास चालीसा
- बाला जी चालीसा
- महालक्ष्मी चालीसा
- पार्वती चालीसा

- खाटू श्याम चालीसा
- रामदेव चालीसा
- राधा चालीसा
- विश्वकर्मा चालीसा
- पितर चालीसा
- बटुक भैरव चालीसा
- जाहरवीर चालीसा
- गिरिराज चालीसा
- नर्मदा चालीसा
- प्रेतराज चालीसा
- संतोषी चालीसा
- गंगा चालीसा
- शारदा चालीसा
- ललिता चालीसा
- अन्नपूर्णा चालीसा
- श्री वैष्णो चालीसा
- परशुराम चालीसा
- विन्ध्येश्वरी चालीसा
- ब्रह्मा चालीसा
- शाकम्भरी चालीसा
- राणी सती चालीसा
- गंगाराम चालीसा
- बालक नाथ चालीसा
- मोहन राम चालीसा
- शीतला चालीसा